महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

१२/०९/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरुजी को नमस्ते।

सभी आत्माएं, अपने मूल स्वरुप में बैठे... अपने मूल स्वरुप का अनुभव करें... सभी देखें, अपने मूल स्वरुप को, अपने सत्य स्वरुप को... मैं आत्मा, सितारा, ब्रेन के अंदर, हाइपोथलमस और पिचुटरी के मेरे सिंहासन पर स्थित हूँ... एक चमकता सितारा... अनुभव करे अपने सत्य स्वरुप को... यह सितारा मैं आत्मा हूँ जो सभी मेरे सूक्ष्म और स्थूल कर्मेंद्रियों को चलाता हूँ... हर कोई अपने मूल स्वरुप को अनुभव करे... क्या अनुभव हो रहा है.. इस अनुभव को अनुभव करें..... यह अनुभव मेरे मूल स्वरुप का अनुभव है इस अनुभव को नोट करें... अंदर उतरे.. देखें सितारे से क्या क्या अनुभूति हो रही है... यही मेरा सत्य स्वरुप है...

हर आत्मा का पहला कर्तव्य है अपने मूल स्वरुप में बैठना, अपने मूल स्वरुप स्थिति में रहना। आत्मा अपना पहला कर्तव्य भूल गई है उस कारण वो अपने मूल स्वरुप को ना देख पाती है ना अनुभव कर पाती है। आत्मा स्वयं के अस्तित्व को भूलने के कारण जिस देह में वो पार्ट बजा रही है वह देह उसी को ही उसने अपना अस्तित्व मान लिया है। जबकि वह अस्तित्व उसका है ही नहीं। आत्मा को इस एक जन्म में वह शरीर मिला है पर आत्मा उस शरीर के परवश होके अपना रिअल सत्य स्वरुप को भूल गई है और जो अनरिअल है जो शरीर में पार्ट बजा रही है, उस पार्ट को रिअल समझ बैठी है। जब आत्मा अपने मूल स्वरुप स्थिति में रहकर पार्ट बजाएगी, तब ही आत्मा को उस पार्ट में आनन्द आएगा। क्योंकि हर पार्ट श्रेष्ठ है, सिर्फ आत्मा की वो अवस्था नहीं है इसलिए बाहरी रुप से आत्मा परवश होने के कारण, अपने स्थिति में ना होने के कारण, जिस शरीर में पार्ट बजा रही है, वो शरीर के पार्ट से तंग हो रही है, जो अनरिअल है, उसको रिअल समझ के, आत्मा अपनी उर्जा को व्यर्थ गवा रही है। आत्मा को हर पार्ट उस पार्ट का हर कर्म अपने मूल स्वरुप स्थिती

में बैठकर बजाना होगा तब आत्मा उसके हर पार्ट के हर कर्म को हर एक उस एक्टिविटी को एंजॉय करेगी। क्योंकि पार्ट आखिर पार्ट है और आत्मा की स्थिती अपनी स्थिती है।
पार्ट चाहे कुछ भी हो पर आत्मा अपने स्थिती में अगर होगी तो वो हर पार्ट को बेस्ट पार्ट बजाएगी इसलिए सबसे पहले आत्मा को अपने मूल स्वरुप की खींच होनी चाहिए। अगर आत्मा दिल से चाहेगी कि मुझे मेरे सत्य स्वरुप में, मूल स्वरुप में जल्द से जल्द आना है अपने आप आत्मा को वह अवस्था मिलती जाएगी। जब तक शरीर में रहेगी आत्मा तब तक उसे पार्ट बजाना ही है पार्ट से छूट नहीं सकती। फिर शरीर को नहलाना हो, भोजन कराना हो, कर्म कराने हो हर प्रकार के हर पार्ट से आत्मा कभी छूट नहीं सकती फिर आत्मा कोई भी युग में अपना पार्ट बजा रही हो, पर अगर आत्मा अपने स्थिती में होगी, तो हर युग उसके लिए मौजों का युग होगा।

आत्मा को सिर्फ एक बात का ध्यान रखना है, बस मुझे मेरे मूल अवस्था में पहुंचना है, जो कि मैं हू, वह मूल अवस्था कहा गयी नहीं हैं बस मुझे उसे जागृत करना है। हर आत्मा अपने जागृती पर ध्यान दे। एक दिन आता है दिन पूरा हो जाता है पर हर दिन आत्मा ने क्या प्राप्ति की हर दिन आत्मा अपनी कौनसी अवस्था को प्राप्त हो रही है यह हर आत्मा को अपनी चेकिंग करनी चाहिए। आत्मा अपना हर पार्ट कैसे बजाती है यह हर रोज उसको अपनी चेकिंग करनी होगी। आत्मा जिस शरीर में पार्ट बजाती है उसकी दिनचर्या तो वैसे रोज की तरह होती है तो आत्मा को रात को शरीर को सुलाने से पहले अपनी चेकिंग करनी चाहिए, क्या आज पूरे दिनभर में मुझ आत्मा ने मेरा हर एक पार्ट कैसे बजाया? क्या हर पार्ट बजाते समय मैं मेरी अवस्था में थी? जो मेरी शान्त स्वरुप अवस्था है, मेरी सुख स्वरुप अवस्था है, मेरी प्रेम स्वरुप अवस्था है, मेरी आनन्द स्वरुप अवस्था है। क्या मुझ आत्मा ने आज दिनभर का पार्ट इन सभी में से कोई ना कोई एक गुण स्वरुप होकर बजाया? रोज के रोज हर आत्मा को अपना यह पोतामेल रखना चाहिए। आज मुझ आत्मा ने कौनसे गुण के साथ कौनसे शक्ती के साथ पार्ट बजाया और साथ ही साथ ये भी चेक करना चाहिए कि आज मुझ आत्मा द्वारा या कोई विपरीत अस्तित्व द्वारा कोई विपरीत पार्ट तो नहीं बजा? हर कोई

अपने से चेक करे। आत्मा अपने स्थिति में होगी तो सदा वह श्रेष्ठ पार्ट ही बजाएगी, गुणस्वरूप पार्ट ही बजाएगी, पर जिस समय आत्मा अपने स्वरूप में नहीं होगी तो विपरीत अस्तित्व उस शरीर के द्वारा पार्ट बजाएंगे तो हर आत्मा को जो शरीर मिला है उस शरीर के ऊपर सम्पूर्ण नियंत्रण करके पार्ट बजाना होगा और आत्मा पार्ट तभी बजा पाएगी जब वो अपनी मूल अवस्था में होगी।

आत्मा अति सुन्दर और सभी गुणों से भरपूर है। तो अगर पूरे दिन भर में हमसे अगर कुछ भी विपरीत पार्ट बज रहा है तो हर कोई चेक करना यह पार्ट मेरे द्वारा किसने बजाया क्योंकि मैं आत्मा तो शान्तस्वरूप हूँ, मैं आत्मा तो प्रेमस्वरूप हूँ, मैं आत्मा तो सुखस्वरूप हूँ, तो किसी के साथ व्यवहार करते समय, अगर इन गुणों के साथ पार्ट नहीं बजा, तो सच में किसने बजाया, और यह पार्ट विपरीत रूप से अगर बज गया शरीर के द्वारा तो उसका हिसाब किताब आत्मा को करना पड़ेगा। अंत में हर किसी को अपना हिसाब किताब स्पष्ट रूप से पता चलेगा कि हर किसी के द्वारा किसने पार्ट बजाया। पर उस समय कुछ भी हाथ में नहीं रहेगा। ना समय होगा, ना आत्मा के पास स्थूल शरीर होगा आत्मा को भुगतना होगा। इसलिए अभी जिस शरीर में आत्मा है वह जागृत हो जाए और अपने हर कर्मेंद्रियों के ऊपर आत्मा अपना कंट्रोल पाए क्योंकि हर किसी के हर कर्म नूँध हो रहे है उससे कभी कोई छूट नहीं सकता, ना कभी कोई छूटा है ना कभी कोई छूटेगा इसलिए आत्मा यही ध्यान रखे कि मुझे मेरा हर कर्म बेस्ट पार्ट बजाना है, गुणस्वरूप होकर पार्ट बजाना है।

हर आत्मा को यह पता नहीं है कि उसके पास वो जिस शरीर में पार्ट बजा रही है वह कितने समय तक वह पार्ट बजाएगी। इसलिए सभी आत्माएं जागृत हो जाए, जल से जल्द अपने मूल अवस्था में आकर हर रूप से हर प्रकार से अपने ऊपर आप ही कृपा करें। इतने जन्म पार्ट बजा कर बहुत कुछ खाता जमा हुआ है फिर वो अच्छा हो या बुरा हो पर संगम पर आत्मा अपना हर खाता को चुक्तू कर सकती है जो कि विपरीत रूप से उसने कोई भी जन्म में वह पार्ट बजाया हुआ हो। संगम पर आत्मा को पूर्ण रूप से मार्जिन है अपने सभी पार्ट को ठीक करने की, अपने सभी कार्मिक अकाउंट को सेटल करने की और आने वाले अगले कल्प के लिए श्रेष्ठ पार्ट बजाने के लिए अपने

आपको तैयार करने की। बस आत्मा सदा होश में रहें मैं यहाँ जो करूँगी वह मुझे ही भुगतना होगा फिर अच्छा हो या बुरा हो। हर कोई अपने आपको रोज चेक करें आज के दिन मेरी कमाई हुई या घाटा हुआ। जब रोज स्वयं की चेकिंग करेंगे तो ही आप परिवर्तन कर पाएंगे। बिना स्वयं की चेकिंग के कभी कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। आज का और अंत तक का यह होमवर्क है कि रोज अपने हर कर्म की चेकिंग करना और रोज देखना कि आज कुछ पाया है या कुछ खोया है। यह अभ्यास जो भी आत्मा रोज करेगी उसको अपने अंदर परिवर्तन जल्द ही दिखेगा पर यह अभ्यास दिल से करें।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः